Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

पाछें दंडवत करि अनोसरि करें मंदिर को ताला मं
गल करें पाछें दिन घड़ी ६ पाछिलो रहें तब स्नान
करि मंदिर में आय तिलक छापा करि उत्थापन भो
ग की पारसा जें तामें ईतनो राखो वाके लडुवा ८ तर
मेवा मिठाई नग ४ की कटोरी अत्थ पत्रनी पाते भा
रो वहीं ७ ताई ईतनो ओर धरनो फलाम्नंग अथवा मृ
ग की दारि अथवा चना की दारि यह फिरतो फिरतो
धरनो का वे भिजोये धरे जब मूंग धरें तब नूतन धरे
मूंग में गिरी की फाक धरें चना की दारि में अजवायन
डारि मिलावें लोन की कटोरी जूदी धरें मूंग दारि धरें
तब कटोरी लोन तथा मिरच की जुदी धरें याप्रकार
रासिद्धि करि तब घंटा वेरि ती ३ बजाई संखनाद वे
र ३ करवाई मंदिर के वार ने जाई भगवद्नाम ले
ह मंदिर के किवाड खोलें मंदिर में जाय सिंघासन
आगें की तह पर की अपर्णा ताचौकी जो होई सो उ
ठावे पेडापर की गादी उठावें पाछें माला फूल की प
हराय किवाड खुलाय दूरसनि होई झारी तथा बीडा
की तबकडी उठाई ल्यावे झारी ठलाई नई भरि ले जा
य धरें तब टेरा दें सिंघासन पर गादी आगें छोटी प
डगी धरें तापर उत्थापन भोग की साजी है सो भोग धरे धार
रे टेरा है बाहिर आवें पाछें सिज्या मंदिर में जाय सि
ज्या पास ते बीडा की पातबकडी झारी तष्टी यह सा उ

से·नि· ठायल्यावें । तब्धी धोइ सिज्यामंदिरमें धरिआवें । पा
८ छेंऊ त्यापनभोगकेवीडाकीतष्यासिज्याकेवीडाकी
तवकडीसाजें । दोऊतवकडीमेंकटोरीकपूरकीअ
थवाजायफलजावित्रीकीरितुअनुसारधरे । अनु
पनभोगकीतवकडीमेंवीडा ॥ ४ ॥ धरने । पाछेंसवारे
कीसीनाइसिज्यापेरिसमारे । पाछेंभोगसरायवे
कूऊठे । वीडाकीतवकडीसिंघासनपरदांहनीदिस
धरिपूर्वकीरीतिसोआचमनकरावें । मुखवस्त्रकरि भोग
सरावें । सिज्यापासनेंचोप[illegible]कीचोकी सिंघासनपर
आगेंल्यायधरे । तब्धीवीचकीचोकीकेआगेंधरें । पा
छेंकिवाडखुलायदर्शनकरावें । पद ॥ १ ॥ गायजायते
तोदर्शनहोई । पाछेंआरतीकरिवेकोनाखंडबेरा
डकीचौकीचोकीनहीयहसबऊठाय धेरादे वीडा
कीतबकडीझारीऊठावें झारीफेरिभरिधरें । हाथ
देपडगीत्यायधरें आपरसंल्याभोगकीथारधरें
थारमेंएकनेपकवानसमर्पनो सोमंगलभोगमें
भयोहोयनाहीमेंकोयाभांतिभोगधरि सिज्यामं
दिरमेंजाई सिज्यामंदिरकेबंटामेंनेर धरिबंटा
पडगीपरिधरिसिज्यापासधरे तथाझारीधरे वी
डाकीतबकडीसवठीककरिधरे जोऊस्नकालहो
यतोबंटाआदिसबवासिहूकरेराखें सेंनआरते
पाछेंजबसिज्याबाहिरतिवारीमेंपधारें तबसब

से·नि साथहीवडोकरें। याभांतिसिंगारवडोकरिमुखवस्त्र
८ श्रीअंगसवपोछे भलीभांतिश्रीअंगवस्त्रकरें। पाछें
श्री...केसिंघासनपरपधरावें। पाछेंस्थानवुलावेंमारी
बिडाजळस्पधैयाकरावें वस्त्रएकदुहरोश्रीठाकुरजी
केआगेंबिछावें। नयावस्त्रएक॥१॥ वोतहकरिआपनें
पमेंराखें। बेसरिश्रीठाकुरजीकीवडीकरि नवघेयासि
द्धिहोई। नवनवकडीमेंकरि आपनेंहातमेंवस्त्रपरा
खिओखिमूंदिकरिआरोगावनगौंय। जोकोईस्मरीन
वकडीमसिद्धिहोई। नवनोईराखें। ओसेंनवकडी। दत
या॥१०॥ आरोगावें। पाछेंबेसरिधरायडबराधरें। पाछें
जी श्रीपादुकींको चोकीपरपधरायसिंगारवडोकरि। सिं
ज्यासवारिसिज्यापरपधरायपरिनुअनुसारऊठावें। प
छेंडवरासरावें। आचमनकरायश्रीमुखवस्त्रबीडोध
रिबीडा॥१॥ सिंघासनपरधरें। पाछेंपडगीऊपरमंदि
रवस्त्रकरि सिंघासनकोफलटकनावांधें। चोकीमांडें
झारी भरिधरें। चोकीपरपातरि॥१॥ बिछावें। चोकीकेनी
चेंपीढा१धरें। पडगी१ चोकीपासदाहनीदिसधरें ता
परलोनसधानाकीकटोरीधरें। नीबूकोसधानानध
रें। साकएककटोरामेंकरि६ चोकीपरिधरें। झालनको
हैंडासरससवग्वालेंरिकीफली। मुवामेचूसककरकें
री येसाकसेनभोगमेंनकरनो। वाकोफिरतेफिरते
फिरतेकरने। स्याकढीलोहोई तो चमचामेंलेंकटोरा

तथापाछें । आनिमंदिरमेंजाय । बीडासिंघासनपरधे
रे । होहिनी । औरजोदूसरीबेरग्वालनेंपोहोइतौग्वा
लहुंकू । बीडा ।२। सिंघासनपरवाईदिसधरें । पाछें
आचमनकरायमुखवस्त्रकरिभोगसरावेंमालाप
हरावें । चोकीकुलाईमंदिरधोवें । पाछेंसिंघासनको
पटकनारखोलें । पाछेंकिवाडखुलाई । दर्सनिहोई । आ
रतीकरें । दंडवतकरिहाथधोईटेरादे । शृंगारकीचो
कीवस्त्रसुद्धासिंघासनआपुन्यापधरे । पाछेंमालु
वडीकरिसेज्यापासधरिआवें । पाछेंस्रमनकेसिंगा
रकीचोकीपरपधरावें । वागोबडोकरें । मुकेअंगवस्त्र
सुधीअंगवस्त्रपोछें । पाछेबीजपूरराखेहोईतोवे
हुबडेकरें । पाछेंस्रमनसिंघासनपरपधरावें । दंडव
नकरिहाथधोईपाछें । सीतकालहोईतोहाथसे
केपाछें । तीनोठोरकीवेसरिसंभारिदेखें । पाछेंश्री
ठाकुरजीश्रीस्वामिनीजीसुद्धासाथहीसेज्याप
रपधरायपोढावें । तबयहश्लोकपढें । भावात्मका
स्मतइइदयतत्यंकेसेसत्पकु । रमपेखराधया
कपाध्यायनोरसिभावतः ।१। पाछेंरितुअनुसार
कुठावें चादरकुलाईसुपेतीजोचाहीहोइसोसब
ओरतेंसवारिधरें । पाछेंश्रीगोवर्द्धनसालिग्राम
सिवा जीकीचोकीश्रीठाकुरजीकेंदाहनेहाथ ।१। जुरिश्री
गोकुलेशजीकीपाजिगडीसोलगाई । पोढाईयें

Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

ठाकुर

पाछें श्री गुसांईजी की सिज्या नें श्री गुसांईजी को ।

दाहिने पा[illegible]न की ओर पूरव पीठ पश्चिम मुख राखि

पोढावें। श्रीगोकुलेशजी की पादुकाजी की पलिंगडी

ठाकुर के दाहिने उत्तर मुख राखें श्रीगोवर्द्धनसालि

ग्रामके नीचें श्रीगुसांईजी की पलिंगडी तें बिछा

र[illegible]जा में राखिये। तहां पीठा। धरि। बंटा भोग को

तामें भोर[illegible] धरें। तपा झारी हु धरें। दोऊ पलिंगडी

के नीचे राखें। सिज्या भोग को बंटा तपा झारी तपा

बीडी की। तबकडी। सब आगें सिद्ध करि राखे हे

सो सब सिज्या के पास धाम ओर। पडगी पर धरें। तथा

हु धरें। तब श्री ठाकुरजी कू श्री स्वामिनीजी सहित

पोढावें। तब तें यह श्लोक पढीये निरभत कीडनोर

लिमहाकुंजे विश्वाससो:। अन्योन्यं श्रमयेवासीह

न्योस्यो चित्तोसत्तो ॥१॥ रतिश्रमशयानयोरलसलोच

नांभोजयो: कलिंदिमपिकुंजतो रभेमिपुंमरखभि

य:सस्मितं॥ रतांण तरितांकयो मिलित जानुसंवाह

ने। सदा वृजिनाग्नानिम द्वांतिलुटं तिराधेसया ॥२॥

केलिश्रांतशयन श्रीराधासपरसरौ जानि। ह्र

पपांकृतांगानि मुङ्रसिकदोनुसंन्यालई पेष्येहं ॥३॥

प्रातकुंजगृहान्तवहर्पदिसमागत्य स्थितां त्वम

ज स्वभा[illegible] सिदद्रास्मि चर्वितमिदं कार्य हस्तेन

नु तांबुलस्य सदा पुनस्त्वा दिह साक्षि इम सुवर्णाव

मुख्याचार्यैः किसततंमसीदसि पुदि त्वंस्वामि
नीत्वं तदा ॥ ५ ॥ श्रीवल्लभाचार्यमते फलं नान्याक
त्मवाव्यभिचारहेतुः ॥ मयैव तस्मिन्नवधोक्त न
॥ ति स्तत्रोपयोगो खिलसद्धैनाना ॥ ६ ॥ नयोहैयदं
दीवरसुंदराक्षी व्रतस्यवहावतनेस्ताघे ॥ सर्वात्म
भावेनसदास्य दास्यमस्यानिशं शास्तु फलं मान
भूतिः ॥ ७ ॥ श्रीमदाचार्यपदांबुजेनवेषेसङ्कृदिस्थि
॥ ते ॥ मदाश्रीराधिकाकांतस्त्वयति ध्वनि सुस्थिरः
॥ ७ ॥ मन पवित्रपदो भोग भजनंसर्वेषामते ॥ कृतया
नुम्भिते नन्यानुकृतिः काचनविद्यते ॥ ८ ॥ यह ९
श्लोकनको अर्थविचार तदंडवत करि निकसी
ये ॥ दीवीनपासीनकाल होई तो आंगीठी बाहि
रकाढमंदिरको दंडवत करि बाहिर आवे ॥ यारीति
सोनित्यसेवाकरे ॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ प्रति ए
कादशीको गोपीवल्लभमें भोग धरे ॥ ताको प्रकार
रोटी गुडकटोरीनमें ईमनी वल्लधरीये ॥ घी
मुन्योसाक ॥ रायता ॥ दहीवाध्यो ॥ बूरा ॥ खिरखरन
सधाना ॥ लवण ॥ याभांति प्रति एकादशी कुं धरीये
॥ श्रीकृष्णायनमः ॥ प्रति द्वादसी कूं श्रीगोपीवल्ल
भमें भोग धरीयें ॥ ताको प्रकार ॥ भादों वदी १४ नेको
तिकवदी ॥ २ ॥ नाईवडी भात ॥ पापड ॥ १ ॥ तिलवडी
घेवर कचुरीया ॥ औरकटोरीनमें घी ॥ मुन्योसाक
निजमंदिरको तालनाराखनकरिये ॥ [illegible] तिवारीको ता
[illegible] बाबा [illegible]

Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

रापना हरी वांध्यो सधांनानवण ओरअपगहे
नवदी १२ पर्यंतवडी भातकी जागे खीचड़ी धरे
बाकी सब या भांतिधुरे पाछें चैत्रवदी १२ तें वैसा
खवदी द्वादशीन [illegible] फेरवड़ी भातधरनो बाकी पीयंत
सबवाही भांतिधरे वैसाखवदी १२ श्रावनवदी
१२ ताई सिखरनभात दही भांतिधरे फेरनो फि
रतो धरनो सिखरनभातधरे नरनिराल्नो सिख
रनभात बुरामेलिधुरे दहीभातधरे नवईननो
ओरहुधरे कटोरीनमें मुज्यो साक साधांनाल
वण याभांतिधरे ओर सनिद्वादसी को राजभोग
केसाथ श्रीयमुनाजी को भोगधरें ताकोप्रकार ०
कुरके दोह नी दिस बोकीमांड तापरहौडी धरें न मारी
किपानही मा हीधरिवीननीकरि श्रीयमुनाजी
को ध्यानकरि भावसो पधरावें अस्मकाल्नहोई
तो वाहर खेलनजरावें वांमाद्दिस पडगीपरला मास्मा वेहरावें।
रीधरें चरणछुवें दंडवतकरि पडगी आगेंधरि मा
ठ १० अथवा ओर सामिग्रीहोइतो वहस्थारमें ध
रि भोगधरें सो जस्मकाल्नहोईनो सिखरनभात
अथवा दहीभात जो भयो होई सोधरें आमरख
रबुजाहु धरें याभांतिमूनिद्वादसी को धरनो
सीतकाल्नमें एकदोयवेरि मंगलभोगमें हु
सरखडी रूपरोगें ताको प्रकार जो नित्यधरतहे सो

Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

से·नि धरें पडगी २ मखुडीकीमाडे धार १ मेंनवगुणको
११ भात अथवारवीचुडीधरिवापर घीकोकटोराधु
रें न मेंचमचाधरें थोडोघीचमचासोलेलोन
कोभातवारवीचुडोहोई तामेडारें दुसरीपडगी
परधार १मेंयाभांतिधरें वीचोवीचकटोकोकटो
रा पापडतरे तिलवडी घेवर कचरीपास्याकन
ही सधानाकीकटोरी १मो धरें याभांति भांतिमें
मंगल भोगमेंहोई वेरि सरवडी धरें एकवेरिजो
ऊंगकोभात एकवेरिरवीचुडीधरें सि
ज्यासवारिवेकोप्रकार सिज्याकोसिराहनोपछि
पा मपाईनपुरवकोरारवनो मुखीयाहोईसोईनवेरि
संवारें सिज्यामंदिरमेंसीतकालविषेंनहरूईदार
सिज्यामंदिरतेंहा यचारि ओरघाटरोसीबिछावनी
सिज्याकेच्यारोपायनचाईचनीचेंगेरदाके ऊपरपड
पडईयाधरने ऊस्मकालमेंतहनहीं बिछावनी सि
रहाहुनहीं परनसीतहोई तबसपेदीतीनबिछा
वनी कसनाकीरीतिडोलपीछें ग्राछोदिनदेखि
कसन्याबांधने सोश्रीगोकुलनाथजीके ऊस
वमहाऊत्सवताईरहें ऊपरांतनहीं कसनाके
रवामेंघुघरूलगावने याप्रकारसोंकसनाकस
ने पाछेंविलस्तदोईमखमलके एकसिरहाने
एकपायतन ताकेलपेटना आछेमीहींस्वेतवस्त्रके

Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

लपेटने। बीलत्तिसिज्यासीचारचार आंगरघाटघा
टरहे। हाऊबालस्तमेंऊघाऊंघुघूलहाणिलगावने
सोऊबाडोरीमेंसीराखने। ऊबासिज्याकेदोऊओ
ललटकनेरहें। पाप्रकारसोऊबाहोऊबालस्तलर
गाईये। एकसिरहांनेंएकपाईंतधरीये। सिरहां
नेंकेबालबाहस्त आगेगिरताहोइ। मखमलकेदो
ऊओरधरने। ताकेलपेटनरेखतसिरहांनेंकेबा
लस्तमे पेनीहोइ इतीआईकी। तामेंकस्तुरीधरि
दोऊओरडोरीसोबाधिदेनी। जेष्मीकोबाधें मा
सोवर्षपर्यंतरहे फेरिजन्माष्टमीकोनईहोइ। पु
रानीनहोइतोसुपेदीनीनसातिनरपावनी। रात्र
कोसुपेदीमेंचादरिमीहीनसाटनी। दिनमेंचार
रनसाटनी। सुपेती। मेंरूईदोयसेरपडें। ऊस
कालमेंसिज्यापरसुपेती। आछेंगाढेवस्त्रकीबि
छावनी। तापरलेफहेरपटीबारवा रविबिछावेडोल
के। दूसरेदिनतेंबिछे सोदिवारीके दूसरेदिनतांई मघम
रहे। उपरांतनही। तापरचाहर गाढेरंगकीबि
छावनी। तथा बालस्तकेलपेटनाहोनदोनलपे
टने। सिज्यापररजाई ऊपरचादरिलमेंअनुस
रजोईसोऊढाईराखनी। एककोनोठाकुरकेदि
सकोऊलटिराखनो। बाहरजाइनठाकुरहिंडो
राबेठे तादिनतेंरंगीनसबरंगकी। दिनमेंओढ

Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

सेवा १२

जन्माष्टमीकोकेसरिकोदुसरी अष्टमी तांईरहें
सोऊदिनमेंराखनीरात्रकोचादरीसदास्वेतराख
नीयाभांतिचोरस्यादाकिराखनौसोराजभोग
उपरांतउठाईलेनोसिज्याकेपाससाजधरनो
सोसिंगरीकोवढासिरहानेंआईनआपासपडगीप
दिनमेंवंटानहीपडगीपरझारीधरेंपाटियासे
लगाईझारीकेनीचेंचोपडकीचोकीमांडनीसि
हनेदिसवाईदिसरसिज्याकेएकदिनापडदूरिपड
गीपरझारीसिरहानेकेपाईआपासउष्णका
लहोईतोझारिकेनीचेंपडगीपरकरवामा
टीकोस्वेतभीजेवस्त्रसोलपेटधरनोतापरकटो
रीएकमेंकरवडीधरनीताकेनीचेंतष्टीकीप
डगीधरनीताकेनीचेतष्टीपरवीडाकीनवकडी
धरनीदिनमेंवीडा१०रात्रकोवीडा१५कटोरीमें
जायफलजावत्रीजमातकपूरसोवीडाकीनवक
डीमेंमधरेंउष्णकालहोइतोचंदनकोवंटानष्टा
मेंनानवकडीकेवीचोवीचधरनोतष्टासिज्याने
विछानाहरिरसिरहानेचोकीरिमाधरनीजंवी
नापरपसलाघूघरीयादिसवभांतिकेधरेंसवप
डगीनीचेंगिरराकपडाकेचोतहाराखनेंपवि
त्राएकादसीतेंठाकुरजीसवरेरावाहिररहेंत
यासिज्यादिनहुमेंवाहिररहेसोविजेदसमीके
जोतहमेंराग नपद उत्सव...

Converted by Tiff Combine - (no stamps are applied by registered version)

एकश्रीगुसांईजीके ऊ... ... ...इये ...के
सेनभोगधरमें भूरेगेां के रिबाहिरनपधारें सिज्या
केसाजबर्षदिनमें ४ नयेहोई सीतकालकीरी
तिके जमन्माष्टमीतथादिवारीको एकसाजमेंई
तनो चाद्दर २ मीही चाद्दर १ गादी गलेपदोय
वालिस्तकी दोऊ सजया ऐसेही भांतिकरनो ऊस्ना
कालको साजदोय एकडोरईको एकमतामभू
केऊलसबको एकसाजमेंई तनो खेससवादोहर
एकपटोचाद्दर १ मीहीचाद्दर १ गादी गीलाफ
दोय वालस्तकीदोह वीया भांतिदोऊसाजकर
ने सिज्याकेपासराजभोगकी चोपडकी चोकीन
हीरहतहैं श्रीहरि ॥ ॥ वर्षदिनमेंगदररयारिधन
येहोई एकप्रबोधनीको लालनदररि आई बालाल
उतलसको एकश्रीगोकुलनाथजीकेमहाऊत्स
वको लालवाजरदहरि आईको एकबसंतपचमी
कोजरदहरि आईको एकश्रीगुसांईजीकेऊ
त्सवको लालवा जरदहरि आईको यामांतिग
हरि ४ करने श्रीहरि ॥ ॥ रामनोमीठाईवागा
ठाकुरजीपहरें रामनोमीऊपरातखुलेबंदकेआ
गारहोई वडीगरमीहोईतोपिछोडाजूनेरंगी
नधरें सखाजूनेरामनोमीतेधरने श्रीहरि ॥ ॥
...वारा भोगधरिवेको मनोरथ होई तो जपई हो
...लिये ताकेप्रकारदोपराधरीये दोह

13